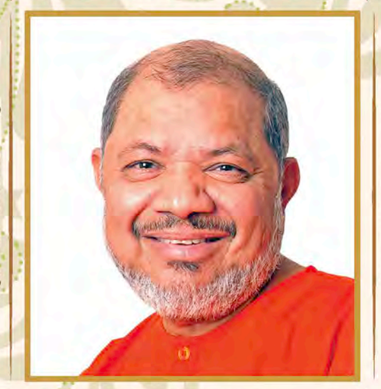

स्वामी तेजोमयानन्द

Swami Tejomayananda



पद्म भूषण

Padma Bhushan



राष्ट्रपति से अलंकरण प्राप्त करते हुए

Receiving the decoration from the President

स्वामी तेजोमयानन्द

स्वामी तेजोमयानन्द चिन्मय मिशन के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। यह एक विशालकाय संगठन है, जो पूरे विश्व में मानवता की सेवा में लगा हुआ है। आपने लगभग 22 वर्ष की छोटी सी अवधि में, जब से इस मिशन की बागडोर संभाली है, इसे एक व्यापक आधार दिया है, जिसमें भारत और विदेश के लाखों लोगों की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक उन्नति शामिल है। भारतीय दर्शन और अध्यात्म में आपका योगदान विरल एवं शानदार है।

2. आपका जन्म 30 जून, 1950 को खरगोन, मध्य प्रदेश में हुआ। आपने विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन से बी.एस सी. की उपाधि प्राप्त की थी। वर्ष 1972 में, महान आचार्य स्वामी चिन्मयानन्द के संरक्षण में वेदान्त के अध्ययन हेतु आपने संदीपनी साधनालय में प्रवेश लिया। अपना पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद वेदान्त का ज्ञान प्रसारित करने के लिए आप भारत और विदेश के विभिन्न केन्द्रों में गए। बाद में, आपने अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में ऐसे चार वेदान्त पाठ्यक्रम संचालित किए।

3. मिशन के अन्य उद्देश्यों में सबसे मुख्य उद्देश्य, वेदांतिक धर्मग्रंथों से आध्यात्मिक उपदेशों को प्रतिपादित करना है। राष्ट्रीयता, पंथ अथवा धर्म का भेद–भाव किए बिना चिन्मय मिशन के किसी भी संस्थान में सभी का स्वागत रहता है। आप इस महान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करते हैं। आपके मार्गदर्शन और प्रयासों से सी ओ आर डी (चिन्मय आर्गेनाइजेशन फॉर रूरल डेवलपमेंट ने आश्चर्यजनक सफलता अर्जित की है। चिन्मय मिशन के इस सेवा–दल ने हिमाचल प्रदेश, ओडिशा तथा तमिलनाडु के 700 से भी अधिक गांवों तक अपनी पहुंच बनायी हुई है। इस कार्यक्रम के तहत, यह मिशन गांवों में स्वास्थ्य, साफ–सफाई, शिक्षा, कृषि, माइक्रो फाइनेंस तथा ऐसे कई अन्य क्षेत्रों में कार्य करता है। इस संगठन का अब विस्तार किया गया है तथा अब यू एस ए में भी 'कोर्ड' के सामाजिक सेवा के कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं। इसके अलावा, आपने वरिष्ठ नागरिकों की भावनात्मक और शारीरिक स्वास्थ्य की देखभाल करने तथा सेवानिवृत्ति के बाद सकारात्मक एवं स्वस्थ–जीवन व्यतीत करने के उद्देश्य से उनके लिए वानप्रस्थ संस्थान खोले हैं।

4. आप न केवल एक वेदांत आचार्य हैं, अपितु भारतीय शास्त्रीय संगीत परंपराओं के पुष्ट ज्ञान आधार सहित एक निपुण गायक और रचनाकार हैं। आपको, पुणे के नजदीक 'चिन्मय नाद बिन्दु' नामक भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य अकादमी की स्थापना का भी श्रेय प्राप्त है। आपने कई पुस्तकों का लेखन किया है तथा सुप्रसिद्ध वेदांतिक पाठों पर कई टीकाएं लिखी हैं। आपने भक्तिपूर्ण और आध्यात्मिक विषयों पर व्याख्या सहित संस्कृत और हिन्दी में कई एक मौलिक रचनाएं की हैं। इसके अतिरिक्त, आपने संस्कृत, हिन्दी तथा मराठी में कई एक कविताओं की रचना की है। आपने विभिन्न मंचों जैसे कि सम्मेलनों और विश्वविद्यालयों को संबोधित किया है, जिनमें मध्य प्रदेश विधान सभा तथा "एक्सपेक्टेशंस फ्राम द कारपोरेट लीडरशिप इन द प्रजेन्ट एनवायरमेंट कॉन्टेक्स्ट" विषय पर नई दिल्ली स्थित फेडेरेशन ऑव इंडिया चैम्बर्स ऑव कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) की 84वीं आम सभा (ए जी एम) में दिए गए भाषण प्रमुख हैं।

5. आपको अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिनमें, गुप्ता फाउण्डेशन द्वारा गुप्ता पुरस्कार (2004), हिन्दुत्व टुडे द्वारा 2005 का हिन्दू ऑव द इयर पुरस्कार, साउथ इंडियन एजुकेशन सोसायटी (एस आई ई एस) द्वारा दिसम्बर, 2012 में आध्यात्मिक नेतृत्व के लिए श्री चन्द्रशेकरेन्द्र सरस्वती नेशनल इमिनेंस अवार्ड तथा न्यूजमेकर्स ब्रॉडकास्टिंग एंड कम्युनिकेशन प्राइवेट लिमिटेड द्वारा मई, 2014 में आध्यात्मिक गुरू के रूप में लाइफ टाइम अवार्ड शामिल हैं।

Swami Tejomayananda

Swami Tejomayananda is the International Head of Chinmaya Mission, a mammoth organisation, which is working for humanity worldwide. In a short period of about 22 years since he took over the reins of the Mission, he has expanded the base of the Mission to include social, economic, educational and cultural upliftment of lakhs of people in India and abroad. His contribution to Indian philosophy and spirituality is rare and spectacular.

2 Born on the 30th of June 1950 in Khargone, Madhya Pradesh, Swami Tejomayananda received his B.Sc. from Vikram University, Ujjain. In 1972, he joined Sandeepany Sadhanalaya (Institute of Vedanta) to study Vedanta under the tutelage of the great master Swami Chinmayananda. After completing the course, he went on to spread the knowledge of Vedanta in various centres in India and abroad. Later, he conducted four such Vedanta courses both in English and Hindi.

3. One of the main thrusts of the Mission is to expound spiritual teachings from Vedantic scriptures. All are welcome in any Institute of Chinmaya Mission, regardless of nationality, creed or religion. He works tirelessly to achieve this goal. Under his guidance and efforts, CORD (Chinmaya Organisation for Rural Development) has taken tremendous strides. This service wing of Chinmaya Mission reaches out to more than 700 villages across Himachal Pradesh, Odisha and Tamil Nadu. Under this programme, the Mission works in the areas of health, hygiene, education, agriculture, microfinance and many other areas for villagers. The organisation has now spread and there are social service programmes of CORD in USA as well. In addition to this, he has opened Vanaprastha Sansthans for Senior Citizens, to look after their emotional and physical health and help them lead a meaningful and healthy life post retirement.

4. Swami Tejomayananda is not only a Vedanta teacher, but also an accomplished singer and composer with a strong knowledge base of Indian classical music traditions. He is responsible for having established an Academy for Indian classical Music and Dance, called Chinmaya Naada Bindu near Pune. He has authored many books and written many commentaries on well-known Vedantic texts. He has also written several original Sanskrit and Hindi compositions on devotional and spiritual subjects, with explanations. In addition, Swamiji has penned a number of Sanskrit, Hindi, and Marathi poems. He has spoken at various forums, like conferences and universities, which include an address at the Madhya Pradhesh Vidhan Sabha and the 84th AGM of the Federation of India Chambers of Commerce and Industry (FICCI) in New Delhi on the "Expectations from the Corporate Leadership in the Present Environment Context."

5. Swami Tejomayananda is also a recipient of numerous awards which include the Gupta Award (2004) by the Gupta Foundation, Hindu of the Year 2005 award by Hinduism Today, Shri Chandrasekarendra Saraswati National Eminence Award for Spiritual Leadership in December 2012 by the South Indian Education Society (SIES), and the Lifetime Award as a spiritual leader in May 2014 by Newsmakers Broadcasting and Communication Pvt. Ltd.